किताब

युद्ध या बुद्ध

अरविंद गुप्ता

सारी सरकारें युद्ध और हथियारी ताकत का गौरवगान करती हैं। आधुनिक युग में युद्ध के भयावह पक्ष को उजागर किया हिरोशिमा-नागासाकी ने। युद्ध-विरोधी साहित्य अब हिंदी में भी उपलब्ध है। अमरीका की युद्ध-लिप्सा के पीछे पूंजीवादी-साम्राज्यवादी मजबूरी है। लेकिन अमरीका में युद्ध-विरोध की भी शानदार परंपरा है।

अरविंद गुप्ता ने कई युद्ध-विरोधी पुस्तकों का हिंदी में अनुवाद किया है। शिक्षा, बच्चों और शांति के मुद्दों पर वे लगातार काम करते रहे हैं।

पताः
इंटर युनिवर्सिटी सेंटर फॉर एस्ट्रॉनॉमी एंड एस्ट्रॉफीजिक्स, पुणे विश्वविद्यालय परिसर, गणेशखिंड, पुणे-411007
फोन- 020-25604602
arvindtoys@gmail.com

1998 में बीजेपी की सरकार द्वारा किए गए पोखरण आणविक परीक्षण ने मुझे झकझोर दिया। लोगों ने इस अवसर पर खुशी जाहिर की, वैज्ञानिकों ने बढ़-चढ़ कर इसकी तारीफ की। संसद में इस उपलब्धि का जश्न मनाया गया। पर मेरा दुख और गहराया, 'लोगों के लिए अनाज, पेयजल, शौचालय, स्वास्थ्य, शिक्षा आवास आदि की बुनियादी जरुरतों को पूरा करने में हमारे वैज्ञानिक पूर्णतः असफल रहे हैं। फिर ये फटाके बजा कर क्यों झूठी वाहवाही लूट रहे हैं?' यह प्रश्न मुझे बहुत दिनों तक सताता रहा।

तब मैने युद्ध-विरोधी पुस्तकों की तलाश शुरु की। बुद्ध और गांधी के इस देश ने दुनिया को शांति और अहिंसा का अनूठा तोहफा दिया है। पर यहां युद्ध विरोधी पुस्तकों का पूरी तरह अकाल है। अपने यहां पाठ्यपुस्तकों से लेकर लोकप्रिय फिल्मी गीत सभी कुछ वीर रस में हैं- जो लड़ाई और दुश्मन को मारने की महिमा का बढ़ा-चढ़ा कर बखान करते हैं। बड़ी मुश्किल से जाकर मुझे **'सडाको और कागज के पक्षी'** नामक एक पुस्तक मिली जिसका मैंने हिंदी में अनुवाद किया। यह कहानी सडाको नाम की जापानी लड़की की है। द्वितीय महायुद्ध में जब अमरीका ने हिरोशिमा पर अणु-बम फेंका तब सडाको दो साल की थी। उस समय तो वो बच गई पर 9 वर्ष बाद वो रक्त-कैंसर से गुजरी। अगर कोई आपसे कहे कि हिरोशिमा और नागासाकी में एटम बम से दो लाख मरे तो शायद आप पलक भी न झपकाएं। पर सडाको की मार्मिक कथा पढ़कर किसी पत्थर दिल व्यक्ति की आंखें जरुर डबडबा जाएंगी।

भारत के आणविक परीक्षण से संपूर्ण भारतीय महाद्वीप में आणविक युद्ध की एक होड़ शुरु हुई। इसके विरोध में मैगसेसे पुरस्कार विजेता संदीप पांडे ने पोखरन से सारनाथ तक की एक शांति यात्रा निकाली जिसमें उन्होंने सडाको वाली पुस्तक की एक हजार प्रतियां बेची। यात्रा में एक जापानी अणु-युद्ध विरोधी कार्यकर्ता भी शरीक हुआ। उसने सडाको की पुस्तक को तुरंत पहचाना। उसकी मदद से हम तीन अन्य अणु-युद्ध विरोधी पुस्तकों को हिंदी में ला पाए। ये पुस्तकें है - **'हिरोशिमा की आग', 'शिन की तिपहिया साइकिल' और 'वफादार जानवर'**। एटम बम की त्रासदी को जापान से ज्यादा और किसी मुल्क ने नहीं झेला है और तभी वहां सबसे संपन्न अणु-युद्ध विरोधी साहित्य रचा गया है। ये सभी पुस्तकें सच्ची घटनाओं पर आधारित हैं। 'वफादार हाथी' अब जापान में 75वें संस्करण में है। यह इसकी लोकप्रियता का सूचक है।

फुकुशिमा अणु बिजली कारखाने की त्रासदी के बाद जापान सरकार ने पिछले माह अपना अंतिम अणु बिजली संयंत्र भी बंद कर दिया है। जर्मनी की चांसलर अंजेला मार्केल ने फुकुशिमा के बाद अपने सभी अणु बिजली कारखाने बंद करने का निर्णय लिया है। आज जर्मनी अपनी एक-तिहाई बिजली पवन और सूर्य की ऊर्जा से पैदा करता है। भारत में अणु ऊर्जा संबंधी चर्चाएं अभी भी एकतरफा हैं। भारत में आणविक नियामक संस्था तक स्वतंत्र नहीं है। भारत में एकमात्र अणु-ऊर्जा विरोधी पत्रिका **'अणुमुक्ति'** नाम की डा.सुरेन्द्र गाडेकर और डा. संघमित्रा देसाई ने शुरु की थी, प्रकाशन बंद करना पड़ा है।

शांति पर दुनिया की एक अन्य नायाब पुस्तक है जिसका नाम **'द स्टोरी ऑफ**

फरडीनैंड' और उसे मनरो लीफ ने लिखा है। 800 शब्द की इस कहानी ने दुनिया में एक अनूठा इतिहास रचा है। 1936 में पहली बार छपी इस युद्ध-विरोधी पुस्तक ने काफी तहलका मचाया। हिटलर ने इस पुस्तक पर पाबंदी लगाई। बहुत कम लोग ही इस बात को जानते होंगे कि यह गांधीजी की बेहद पसंदीदा पुस्तक थी। कहानी फरडीनैंड नाम के एक बैल की है जो लड़ाई का अहिंसक विरोध करता है। शांति का संदेश फैलाने वाली इस पुस्तक का दुनिया की अस्सी से अधिक भाषाओं में अनुवाद हुआ है।

हिंदी में तीन महत्वपूर्ण युद्ध-विरोधी सचित्र पुस्तकों का उल्लेख जरुरी है। पहली पुस्तक है **'बेयरफुट गेन'** जिसे कीजी नाकाजावा ने लिखा है। नाकावाजा ने हिरोशिमा पर एटम बम को खुद गिरते हुए देखा था। वे उस समय 7 साल के थे। इस त्रासदी में केवल उनकी मां बची, बाकी पूरा परिवार शहीद हुआ। 'बेयरफुट गेन' एक जबदस्त युद्ध-विरोधी कथा है। नाकावाजा के पिता को युद्ध का विरोध करने के आरोप में जेल में डाल दिया गया। पूरे समाज ने उनके परिवार का तिरस्कार किया।

दूसरी पुस्तक है- **'माऊस'** जिसे आर्ट स्पीगिलमैन ने लिखा है। आर्ट दुनिया के सर्वश्रेष्ठ ग्राफिक आर्टिस्ट हैं और 1992 में उनकी इस पुस्तक को पुलिटजर पुरस्कार मिला। यह पुस्तक दूसरे विश्वयुद्ध और साठ लाख यहूदियों के कत्लेआम का सबसे सचित्र वर्णन है। कहानी आर्ट के पिता की है जिन्हें ट्रेब्लेन्का में सालों यातनाएं सहनी पड़ीं और जहां उन्हें लगातार गैस भट्टी में झोंके जाने का खतरा सताता रहा।

तीसरी और शायद सबसे महत्वपूर्ण पुस्तक **'लड़ाई से लगाव'** जिसे जोइल आंद्रेज ने लिखा है। आंद्रेज एक प्रतिष्ठित अमरीकी विश्वविद्यलय में समाजशास्त्र पढ़ाते हैं। पर बचपन में उन्होंने वियनतामी युद्ध-विरोधी मोर्चों में अपने माता-पिता के साथ जमकर भाग लिया था। **'लड़ाई से लगाव'** का उपशीर्षक है 'अमरीका क्यों युद्ध छोड़ने में असमर्थ है'।

पुस्तक में अमरीका की विनाशकारी सैनिक ताकत का सविस्तार उल्लेख है। अमरीका शुरु से ही बहुत ज्यादा युद्धों में उलझा रहा है। पैनाप्रहार करती और तथ्यों पर आधारित यह किताब अपने पक्ष में 145 सबूत पेश करती है। पुस्तक शुरु करने के बाद आप उसे पूरा पढ़े बिना रह नहीं पाएंगे। दो घंटों में खत्म होने वाली इस किताब को आप जल्दी भूल नहीं पाएंगे।

'लड़ाई से लगाव' 1992 में अमरीका द्वारा इराकी हमले के बाद लिखी गई थी। पुस्तक का उद्देश्य अमरीका द्वारा छेड़े गए युद्धों की सच्चाई से लोगों का अवगत कराना है। इस काम से मुख्यधारा का मीडिया हमेशा कतराता है। अक्सर युद्ध के समय मीडिया जंग का घोर समर्थक बन जाता है। पुस्तक युद्ध के पीछे अमरीका की असली मंशा को उजागर करती है।

अफगानिस्तान के बाद अमरीका ने इराक के खिलाफ एक नया युद्ध छेड़ा। वर्तमान में अमरीका सीरिया पर हमले की तैयारी में है। ऊपरी तौर पर तो अमरीका आतंकवाद और विनाश के अस्त्रों पर बंदिश लगाने की दुहाई देता रहा है। पर उसकी असली मंशा एकदम स्पष्ट है। एक ओर वह खाड़ी में पिट्ठू सरकारें बनाकर अमरीकी और इजरायली

हितों को सुरक्षित रखना चाहता है। दूसरी ओर वह विश्व के दूसरे नंबर के तेल भंडार पर अपना नियंत्रण कायम करना चाहता है। सीरिया पर हमले के बचाव में रूस बीच में आया है। कुछ सुलह भी हुई है जिसमें सीरिया ने संयुक्त राष्ट्र के नुमाइंदों को रासायनिक हथियार सौंपने की मांग मानी है।

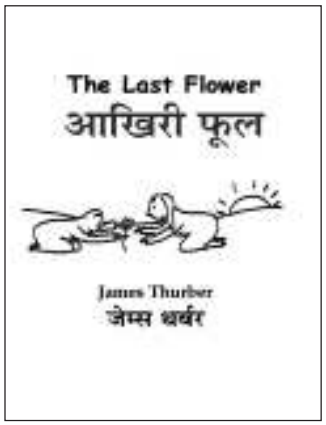

सीरिया आक्रमण को लेकर अमरीकी तेवर कुछ कमजोर पड़े हैं। कारण बाहरी और अंदरूनी दोनों हैं। सीरिया के मसले पर अंतरराष्ट्रीय समर्थन न मिलने के कारण अमरीका काफी अलग-थलग पड़ा है। अमरीकी जनता ने युद्ध की बहुत बड़ी कीमत चुकाई है। इसकी सबसे ज्यादा कीमत सैनिकों और उनके परिवारजनों को चुकाना पड़ी है। पर इससे बाकी जनता भी प्रभावित हुई है। सुरक्षा पर बेइंतहा खर्च से सरकारी बजट लड़खड़ा गया है। उससे शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास, परिवहन और पर्यावरण संरक्षण जैसे महत्वपूर्ण मदों पर खर्चे में कटौती हुई है। साथ-साथ आतंकवाद पर युद्ध छेड़ने के बहाने सरकार पुलिस शिनाख्त कड़ी कर रही है और मानव अधिकारों का हनन करने पर तुली है।

अमरीका में युद्ध-विरोध की एक शानदार परंपरा है। यह युद्ध-विरोधी आंदोलन वर्तमान में मजबूती से उभर रहा है। वियतनाम से वापस लौटे सैनिकों ने पूरे देश को वहां हो रहे युद्ध की भयावह कहानियां सुनाई और उसे बंद करने के लिए संगठित होने की अपील की। अप्रैल 1971 में वियतनाम से लौटे एक हजार सैनिकों ने वाशिंगटन की कैपिटल बिल्डिंग के सामने एकत्रित होकर युद्ध में मिले मेडल्स और तमगों को वापस फेंका। युद्ध-विरोधी आंदोलन के साथ-साथ अफ्रीकी-अमरीकनों, लैटिनों, अमरीकी आदिवासियों, महिला आंदोलन और अन्य दलित आंदोलनों ने भी अन्याय के खिलाफ लोगों की आंखे खोलीं। जोरदार युद्ध-विरोधी आंदोलन के कारण अमरीकी सरकार को वियतनाम से हटना पड़ा। इस युद्ध-विरोधी भावना को 'वियतनाम सिन्ड्रोम' का नाम दिया गया।

सोवियत रूस के पतन और शीत युद्ध की समाप्ति के बावजूद अमरीका आणविक हथियारों का विकास कर रहा है। उसने आणविक मिसाइलों और परीक्षणों को रोकने वाली संधियों का बहिष्कार किया है। इसलिए अन्य देश भी अमरीका की नकल करने को मजबूर हैं। इस वजह से आज पूरे भारतीय महाद्वीप पर भी एक आणविक युद्ध का साया छाया है। आज पृथ्वी का कोई कोना सुरक्षित नहीं है। '**लड़ाई से लगाव**' पुस्तक अमरीका के खूनी इतिहास की जानकारी उजागर करती है। पुस्तक में यह भी दिखाया गया कि किस तरह अमरीकी नीतियां चंद ठेकेदारों और राजनेताओं को मालामाल कर रही हैं और आम जनता को कंगाल बना रही हैं।

युद्ध अमरीकी मजबूरी है। अगर वहां मिसाइलों और शस्त्रों का उत्पादन बंद होगा तो वहां की अर्थव्यवस्था पूरी तरह लड़खड़ा जाएगी। इसलिए नए-नए शस्त्रों का निर्माण और उनकी खपत वहां की अर्थव्यवस्था के लिए नितांत आवश्यक है। शस्त्रों की खपत के लिए अमरीका अपने देश से दूर दुनिया के किसी अन्य कोने में हमेशा युद्ध लड़ता या लड़वाता रहता है।

युद्ध विरोधी साहित्य

लड़ाई से लगाव

प्रकाशक- बैनयन ट्री बुक्स
1-बी, दूसरी मंजिल, धेनू मार्केट, इंदौर-452003

सडाको और कागज के पक्षी
हिरोशिमा की आग
वफादार हाथी
शिव की तिपहिया साईकिल
आखिरी पन्ना

इन पुस्तकों के प्रकाशक:- भारत ज्ञान विज्ञान समिति
बेसमेंट, यंग वीमेन्स होस्टल 2, जी ब्लाक,
साकेत, नई दिल्ली-110017

ये तथा अन्य पुस्तकें वेबसाइट पर भी उपलब्ध हैं-
http://www.arvindguptatoys.com/